कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Krishna Sobti Tatha Indira Goswami Ke Upanyason Mein Stree Vimarsh

Thesis Submitted for the partial fulfilment of the requirements for the Degree Doctor of Philosophy in Arts

By

पूजा मिश्रा

POOJA MISHRA

हिंदी विभाग

DEPARTMENT OF HINDI

मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय

FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

PRESIDENCY UNIVERSITY, KOLKATA

अगस्त : 2023

AUGUST : 2023

कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Krishna Sobti Tatha Indira Goswami Ke Upanyason Mein Stree Vimarsh

Thesis Submitted for the partial fulfilment of the requirements for the Degree Doctor of Philosophy in Arts

By

पूजा मिश्रा

POOJA MISHRA

Under the supervision of

प्रो. तनुजा मजुमदार

PROF. TANUJA MAJUMDAR

हिंदी विभाग

DEPARTMENT OF HINDI

मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय

FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

PRESIDENCY UNIVERSITY, KOLKATA

अगस्त : 2023

AUGUST : 2023

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

Presidency University
Hindoo College (1817-1855), Presidency College (1855-2010)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि पूजा मिश्रा ने पीएच-डी. उपाधि के लिए **'कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श'** शीर्षक शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में प्रस्तुत किया है।

यह शोध कार्य पूजा मिश्रा की मौलिक कृति है, न तो इसका कोई अंग उनके द्वारा किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत हुआ है और न ही मेरी जानकारी में अब तक किसी अन्य व्यक्ति ने इस पर शोध कार्य किया है।

मैं इन्हें शोध कार्य, आचरण और चरित्र की दृष्टि से इस उपाधि के योग्य एवं उपयुक्त समझती हूँ।

प्रोफ़ेसर तनुजा मजुमदार
शोध निर्देशक
हिंदी विभाग,
प्रेसिडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता

Prof. Tanuja Majumdar
Department of Hindi
Presidency University
Kolkata-700073

86/1, College Street, Kolkata - 700 073, Phone : (033) 2241 1960, Fax : (033) 2241 2738

उपसंहार

“Alas! A woman that attempts the pen

Such an intruder on the rights of the men,

Such a presumptuous Creature is esteem’d

The fault can by no vertue be redeem’d

—Anne Finch, Countess of Winchilsea”[i]

एनी फिंच (1661-1720) अट्ठारहवीं सदी में इंग्लैंड की प्रसिद्ध कवयित्री थीं। उपरोक्त पंक्तियाँ उनकी कविता ‘द इन्ट्रोडक्शन’ से ली गई हैं। यह कविता उनकी मृत्यु के 183 वर्ष बाद 1903 में प्रकाशित हुई थी। कविता के माध्यम से फिंच स्त्रीत्व की वास्तविकता और स्त्रीत्व की सांस्कृतिक निर्मिति के बीच के अंतरों को रेखांकित करती हैं। पुरुष निर्मित कविता में स्त्री को उसके वास्तविक स्वरूप से विस्थापित कर स्त्रीत्व की संकीर्ण परिभाषाओं में कैद किया जाता है। अपने समय में एक महिला कवि होने की बाधाओं को फिंच पूरी तरह समझती हैं और यह अनुभव करती हैं कि साहित्य की दुनिया में पुरुषों का वर्चस्व है। अपनी कविता के माध्यम से वह स्त्रियों को सौंपी गई भूमिकाओं पर प्रश्न उठाती हैं। महिला कवि होने में आने वाली अनेक बाधाओं के बावजूद यह कविता एनी फिंच के दृढ़ संकल्प को चित्रित करती है। कविता यह बताती है कि पुरुष वर्चस्ववाद से प्रभावित साहित्यिक परंपरा में स्त्री कवि की सीमाएं निर्धारित होती हैं तथा एक स्त्री साहित्यकार अपने हाथ में कलम पकड़ कर पुरुषों की दुनिया में घुसपैठिया बनती है और आने वाली पीढ़ी की अन्य स्त्रियों के लिए रास्ता बनाती है। एनी फिंच की इस कविता से पता चलता है कि कलम को आकस्मिक नहीं वरन अनिवार्य रूप से पुरुष के लेखकीय उपकरण के रूप में परिभाषित किया गया है। अतः कलम हाथ में लेनी वाली महिला घुसपैठिया होने के साथ ही अविश्वसनीय भी होती है। उसके इस दोष को माफ नहीं किया जा सकता क्योंकि उसने समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन किया है।

“Infection in the sentence breeds.

We may inhale despair

At distances of centuries

From the malaria.

— Emily Dickinson”[ii]

अमेरिकी कवयित्री एमिली डिकन्सन (1830-1886) की अधिकांश कविताएं उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई थीं। एमिली ऐसे समाज में लिख रहीं थी जो स्त्रियों के मात्र घरेलू रूप को ही उसका वास्तविक रूप मानता था। एमिली डिकन्सन की इस कविता के विभिन्न उपपाठ भी हैं परंतु सभी उपपाठ एक दूसरे से अलग नहीं है बल्कि एक ही अर्थ की विभिन्न परतों की तरह हैं। यह कविता उनकी गहरी स्त्री चेतना को भी इंगित करती है। इस कविता में एमिली कहती हैं कि लिखा हुआ वाक्य एक संक्रमण पैदा करता है। ‘We may inhale despair’ पंक्ति यह इंगित करती है कि पुरुषवर्चस्ववाद से प्रभावित साहित्य, स्त्री-स्वायत्तता को स्वीकार नहीं करता और इससे स्त्री लेखक को प्रेरणा के रूप में मात्र निराशा हाथ लगती है। स्त्री लेखक को अपना रास्ता खुद बनाना पड़ता है।

उपरोक्त उद्धरणों के माध्यम से समझा जा सकता है कि स्त्री के लिए लेखन के क्षेत्र में आना और अपनी जगह बनाना आसान नहीं था। अतः अनिवार्य रूप से स्त्री के हाथ में कलम का आना एक ऐतिहासिक क्षण था जिससे स्त्री चेतना के प्रसार का आरंभ हुआ। सदियों से प्रभुत्वशाली पितृसत्ता ने स्त्रियों को समाज एवं साहित्य से बहिष्कृत रखा था। पितृसत्ता को स्थापित करने वाले साहित्य में स्त्रियों के बारे में स्टीरियोटाइप मिथों को रचने की लंबी परंपरा रही है। इसके ठीक विपरीत स्त्री लेखन का उद्देश्य स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करना, उसकी संवेदनाओं, भावों और विचारों को अभिव्यक्त करना है। स्त्री लेखन के इस प्रयास से पितृसत्तात्मक व्यवस्था क्रमशः कमजोर होती जाती है। अतः स्त्रियों द्वारा रचित मौखिक और लिखित दोनों ही साहित्य के विवेचन से स्त्री चेतना का स्वर मुखर हुआ है। स्त्री लेखन के माध्यम से दमित और उत्पीड़ित वर्ग की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति मिलती है।

भारतीय साहित्य के संदर्भ में स्त्री लेखन परंपरा का आरंभ बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा पालि भाषा में रचित ग्रंथ 'थेरीगाथा' से माना जाता है। 'थेरीगाथा' में संकलित कविताएं गृहस्थ जीवन से स्त्री मुक्ति संघर्ष की आरंभिक कविताएं हैं। बौद्ध युग में मोक्ष और निर्वाण का पथ केवल पुरुष के लिए ही निर्धारित था। थेरियाँ गृहस्थ जीवन से बाहर निकल कर आत्ममुक्ति का पथ चुनती हैं। सुमंगला माता, सोमा थेरी, आम्रपाली तथा सुमना के साथ 73 थेरियों की कविताएं इसमें संकलित हैं। निर्वाण प्राप्ति के लिए लिखी इन कविताओं में अवसाद, मातृत्व, छल, आघात इत्यादि गूढ़ मानव-अनुभूतियों का चित्रण है। सोमा थेरी उन बंधनों को भलीभांति समझती है जो स्त्री मुक्ति के विकास के मार्ग में बाधक हैं। वह अपनी एक साथी थेरी से कहती है।

"तिस्सा!
प्रशिक्षित कर खुद को
बंधनों को रोकने मत दे अपने आप को
जब तुम आजाद होगी उन समस्त बंधनों से
जो तुम्हें पीछे खींचते हैं
तब रह सकोगी दुनिया में सब बुराइयों से मुक्त"[iii]

थेरीगाथा के पश्चात मध्यकालीन भक्त कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री चेतना के स्वर को मुखर किया। उमा, पार्वती, मुक्तबाई, झीमाचारिणी, मीराबाई, सहजोबाई तथा दयाबाई इत्यादि कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति आंदोलन के साथ ही अपने युग के काव्य को एक नई दिशा दी। उल्लेखनीय है कि भारतीय स्त्री की आध्यात्मिक अनुभूतियों को भारतीय साहित्य में मान्यता मिली। परंतु राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैश्विक परिदृश्य को समेट कर स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र में स्त्री को अपनी जगह बनाने में काफ़ी संघर्ष करना पड़ा। यद्यपि आधुनिक काल में स्वतंत्रता से पूर्व के स्त्री लेखन में समाज सुधार, परिवार तथा राष्ट्रप्रेम का वर्णन मिलता है परंतु यह राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का ही एक अंग है। यह स्त्री लेखन उस युग की सुधारवादी नीतियों एवं राष्ट्रीयता से प्रभावित

था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का स्त्री लेखन स्त्री की स्वतंत्र सत्ता, इच्छाशक्ति तथा समान नागरिक अधिकारों को केंद्र में रख कर रचा गया है।

साठवें दशक से भारतीय साहित्य के क्षेत्र में महिला रचनाकारों ने क्रमशः साहित्य में सुदृढ़ जगह बनाई। इस संदर्भ में बांग्ला लेखिका आशापूर्णा देवी (1909-1995) का नाम उल्लेखनीय है। आशापूर्णा देवी के साहित्य में स्त्री मन की पीड़ा, कुंठा, मानसिक द्वन्द्व के साथ ही उसके अस्मिता संघर्ष का चित्रण यथार्थवादी दृष्टिकोण से किया गया है। 'प्रथम प्रतिश्रुति', 'स्वर्णलता' तथा 'बकुल कथा' के नाम से तीन भागों में विभाजित उनकी पुस्तक शृंखला स्त्रियों के अनंत संघर्ष की गाथा है। आशापूर्णा देवी 1976 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' से पुरस्कृत होने वाली पहली महिला लेखिका हैं। महादेवी वर्मा (1907-1987) का लेखन स्त्री चेतना और आधुनिकता बोध से जुड़ा है। उन्हें 1982 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया। उर्दू लेखिका इस्मत चुगताई (1915-1991) ने अपने लेखन से सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ा। इस्मत चुगताई के लेखन को साहसिक और बोल्ड करार दिया गया। अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने मुस्लिम मध्यवर्गीय महिलाओं के हर संभव रूप को चित्रित करने की कोशिश की। 'लिहाफ' और 'टेढ़ी लकीर' उनकी महत्वपूर्ण और चर्चित रचनाएं हैं। पंजाबी साहित्यकार अमृता प्रीतम (1919-2005) के स्त्री पात्र मर्यादाओं के नाम पर थोपी गई रूढ़ सामाजिक मान्यताओं का बोझ लेकर नहीं चलते। अमृता प्रीतम का कैनवस बहुत विस्तृत है। सामाजिक रूढ़ियों से लेकर विभाजन की त्रासदी उनके साहित्य के विषय बने। अमृता प्रीतम को 1981 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया। बांग्ला लेखिका महाश्वेता (1926-2016) देवी का लेखन जहां विद्रोही स्त्री पात्रों को चुनता है वहीं विभिन्न सामाजिक-राजनैतिक संघर्षों को लेखन के केंद्र में रखता है। महाश्वेता देवी ने आदिवासी जन जातियों और बंधुआ मजदूरों के बीच रहकर उनके संघर्षों को चित्रित किया। 'छोटी मुंडा के तीर', 'जंगल के दावेदार', '1084 की माँ' इत्यादि रचनाओं से उन्हें विश्व प्रसिद्धि मिली और 1996 में उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया। महाश्वेता देवी ने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक और राजनैतिक शोषण तंत्र में फंसे हाशिए के समाज का चित्रण किया है। उपन्यास 'जंगल के दावेदार'

में नायक बिरसा ब्रिटिश हुकूमत और साम्राज्यवाद से संघर्ष करने के साथ ही जमींदारी प्रथा और सामंतशाही के विरुद्ध भी संघर्ष करता है। उनकी कहानी 'द्रौपदी' की नायिका अपने साथ हुई यौन हिंसा के विरुद्द आवाज उठाती है और रूढ़ सामाजिक मानकों का विरोध करती है। उर्दू लेखिका कुर्अतुल ऐन हैदर (1927-2007) के 1947 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'सितारों के आगे' को उर्दू-नई कहानी का प्रस्थान बिंदु माना जाता है। उनके लेखन ने आधुनिक उर्दू साहित्य को एक नई दिशा दी। दक्षिण एशिया के इतिहास का क्रमबद्ध विवरण फिक्शन के रूप में प्रस्तुत करता उनका उपन्यास 'आग का दरिया' ऐतिहासिक उपन्यास है जो चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल से लेकर भारत विभाजन तक की त्रासदी पर आधारित है। कुर्अतुल ऐन हैदर को 1989 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया। स्त्री लेखन की इसी सशक्त परंपरा का विकास कालांतर में उड़िया लेखिका प्रतिभा राय के लेखन में दिखाई पड़ता है। प्रतिभा राय ने अपने उपन्यास 'द्रौपदी' के माध्यम से यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि महाभारत काल से लेकर आज तक स्त्री को दोयम स्थिति पर रखा गया है। उड़ीसा की बूँडा जनजाति की जीवन शैली तथा उड़ीसा में आए भयानक चक्रवात इत्यादि विषयों का चुनाव प्रतिभा राय के लेखन को बहुआयामी बनाता है। प्रतिभा राय को 2011 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया।

भारतीय स्त्री लेखन की इसी परंपरा में कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी का नाम उल्लेखनीय है। कृष्णा सोबती को 2017 तथा इंदिरा गोस्वामी को 2000 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया।

'भारतीय ज्ञानपीठ' से सम्मानित उपरोक्त सभी लेखिकाओं ने स्त्री लेखन से जुड़ी रूढ़ियों और मिथ को तोड़ा है। इनका लेखन प्रांतीय लेखन की सीमाओं का अतिक्रमण करता है और अखंड भारतीय लेखन की अवधारणा को बल देता है, जो केवल स्त्री जीवन के मुद्दे तक सीमित नहीं है अपितु युग जीवन और मानव जीवन के सभी पक्षों को समेटे हुए है। इस तरह इन लेखिकाओं ने एनी फिंच की परंपरा को ही विकसित किया। एनी फिंच के समय में स्त्री लेखन स्त्री जीवन तक ही सीमित था एनी फिंच इस परंपरा को तोड़ती हैं। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के समय तक आते-आते भारतीय स्त्री लेखन स्त्री

जीवन के दायरों को तोड़ कर उन सभी क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित करता है जो केवल पुरुष लेखन के लिए ही निर्धारित थे।

कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के लेखन का परिदृश्य लगातार बदलता रहा है। युग जीवन की नाना समस्याएं, ज्वलंत प्रश्न, विडंबनाएं उनके लेखन में समाविष्ट होते गए। केवल स्त्री केंद्रित रचनाओं तक दोनों रचनाकार सीमित नहीं रहे। लेखन कार्य के अंतिम चरण तक पहुँचते-पहुँचते कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी का लेखन प्रांतीयता की सीमाओं को तोड़ कर अखिल भारतीय संवेदनाओं का वाहक बन जाता है। इसलिए कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी को मात्र स्त्रीवादी रचनाकार नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह भी सत्य है कि दोनों रचनाकारों के उपन्यासों में स्त्री जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दे, सशक्त रूप में उभर कर आए हैं। उनके बहुआयामी लेखन में स्त्री जीवन से जुड़ी रचनाएं कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। अपितु यह कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में जिन स्त्री पात्रों को रचा है वे स्त्री जीवन के ज्वलंत प्रश्नों को न केवल उठाती हैं बल्कि पाठक की सोच को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। दोनों लेखिकाएं स्त्री को हाशिए के समाज से बाहर निकाल कर उसके संघर्ष, उसकी वेदना, अंतर्द्वंद्व को लिपिबद्ध करती हैं और साथ ही समाज के पीड़ित अन्य वर्ग को भी अपने लेखन के केंद्र में रखती हैं। कृष्णा सोबती नारीवाद की दूसरी लहर से भी पूर्व छठे दशक के उत्तरार्ध में मित्रो जैसे पात्र का सृजन कर समाज की छद्म नैतिकता को संबोधित करती हैं वहीं इंदिरा गोस्वामी उपन्यास 'छिन्नमस्ता' द्वारा कामाख्या मंदिर के परिसर में होने वाले बलि विधान का विरोध कर धार्मिक कुरीतियों को चुनौती देने का साहस दिखाती हैं।

कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। कृष्णा सोबती के स्त्री पात्र संयुक्त परिवार की जटिल संरचना में स्त्री के समान अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं वहीं इंदिरा गोस्वामी की नायिकाएं स्त्री द्वेषी धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध अपना प्रतिरोध दर्ज करती हैं। अशिक्षा, वैधव्य तथा विवाहेतर संबंधों के मर्म को चित्रित करने के साथ ही दोनों रचनाकारों ने स्त्री के संदर्भ में कार्यस्थल की विषमताओं का विश्लेषण किया है।

विभाजन की त्रासदी तथा 1984 के सिख दंगों जैसी सामूहिक हिंसा की त्रासदी का विश्लेषण कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने स्त्री दृष्टि से किया है।

वैश्विक स्तर पर हुए सभी नारी आंदोलनों का यह एक मुख्य मुद्दा रहा है कि स्त्री और पुरुषों को समान अधिकार दिए जाएं। पश्चिमी देशों में मताधिकार की माँग से तथा भारत में स्वाधीनता आंदोलनों में भागेदारी के साथ ही स्त्री-पुरुष की समानता के प्रश्न को उठाया गया। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों के पात्र इस प्रश्न के प्रति जागरूक हैं। 'डार से बिछुड़ी' की पाशो और 'तीन पहाड़' की जया अपने संघर्षों में भले ही सफल नहीं होतीं परंतु स्त्री की सामाजिक तथा पारिवारिक दोयम स्थिति पर प्रश्न उठाती हैं। 'मित्रो मरजानी' की मित्रो, 'दिलोदानिश' की महक बानो तथा कुटुंबप्यारी इस धारणा का खंडन करती हैं कि परिवार को खुश रखने की जिम्मेदारी बस स्त्री की है। छुन्ना बीबी, वैधव्य के उन धार्मिक आडंबरों पर प्रश्न उठाती हैं जिनके कारण विधवा स्त्रियों का जीवन त्रासपूर्ण हो जाता है। इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों 'चेनाबेर स्रोत' तथा 'मामरे धरा तारोवाल' में श्रमिक स्त्रियाँ सोनी और नारायणी वर्कसाइट्स की चुनौतियों के सामने घुटने नहीं टेकतीं। 'नीलकंठी ब्रज' की सौदामिनी, 'दाँताल हाथिर उने खोवा हौदा' की गिरिबाला वैधव्य के धार्मिक कर्मकांडों के पक्षपात पूर्ण नीति-नियमों का विरोध करती हैं। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के स्त्री पात्र भारतीय समाज में विवाह संस्था और पारिवारिक व्यवस्था के उन नीति-नियमों पर प्रश्न उठाते हैं जिनके अंतर्गत घर में पत्नी की स्थिति सदैव दोयम बनी रहती है। उपन्यास 'दिलोदानिश' में कुटुंब प्यारी, 'चन्ना' की शीला 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' की गिरिबाला पति को परमेश्वर मानने के बजाय उनसे बराबरी के व्यवहार की अपेक्षा रखती हैं। गिरिबाला का मार्क से यह कहना कि वह अपनी बुआ की तरह अपना शेष जीवन मृत पति की खड़ाऊँ पूज कर नहीं बिता सकती, इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि वह पति-पत्नी के संबंध को समानता का संबंध मानती है न कि देवता और दासी का। 'नीलकंठी ब्रज', 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' तथा 'छिन्नमस्ता' में धार्मिक कुरीतियों के आडंबर पूर्ण कर्मकांडों के विरुद्ध अपना प्रतिरोध दर्ज करते स्त्री पात्रों का चित्रण इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि के विस्तार का परिचायक है।

पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों की स्वतंत्र इच्छाओं पर हमेशा से बंदिश रही है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों के स्त्री पात्र जहाँ अपनी इच्छाओं को अभिव्यक्त करने में सकुचाते नहीं हैं वहीं अपनी इच्छाओं को पूरा करने का हर संभव प्रयास करते हैं। कृष्णा सोबती के पहले उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' की पाशो को न ही ममता की छाँव मिलती है न ही शिक्षा-दीक्षा की, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके। परंतु पाशो की जीवन में अटूट आस्था है। यह भान होने पर कि मामा-मामी उसे जहर देने वाले हैं वह रातों-रात घर से भाग जाती है। अपने जीवन और विवाह के प्रति उसने जो सपने देख रखे हैं, उन्हें पूरा करने प्रयास करती है। 'तिन पहाड़' की जया के समक्ष आत्मसम्मान का प्रश्न सबसे बड़ा है। 'दिलोदानिश' की छुन्ना बीबी विधवा होने के पश्चात अपनी इच्छाओं को मार नहीं देना चाहती। अपनी पसंद से कपड़ों का चुनाव करने से लेकर पढ़-लिख कर आत्मनिर्भरता का मार्ग चुनना छुन्ना बीबी के सतत संघर्ष को चित्रित करता है। इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' की सौदामिनी अपना वैधव्य वृंदावन की अन्य विधवाओं की तरह मात्र भजन गा कर नहीं काटना चाहती। अपनी इच्छाओं को मारना नहीं चाहती। उपन्यास 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' की गिरिबाला विधवाओं के लिए निर्धारित बेस्वाद उबले भोजन को छोड़ कर अपनी इच्छा से दादा के श्राद्ध में बना आमिष भोजन खाती है। इंदिरा गोस्वामी के नारी पात्र परिस्थितियों में स्वयं ढलने के बजाय उन परिस्थितियों को स्वयं के अनुकूल बनाने के लिए प्रायः ही विद्रोह का मार्ग चुनते हैं। 'नीलकंठी ब्रज', 'दांताल हाथीर उने खोवा हौदा', मामरे धरा तारोवाल' में स्त्री पात्रों के इस विद्रोह के स्वर को सुना जा सकता है।

'बधिया स्त्री' में जर्मेन गियर लिखती हैं कि स्त्री के पालन-पोषण के जरिए उसे ऐसा बनाया जाता है कि उसमें एक बधिया की खूबियाँ विकसित हों। उसे एक अयौनिक प्राणी समझा जाता है तथा उसकी लैंगिकता को हमेशा विरूपित करने का प्रयास किया जाता है।[iv] कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में मित्रो, महकबानो, गिरिबाला, सारू गोसाइन, सौदामिनी, शशिप्रभा तथा निर्मला अपनी सहज यौनिक इच्छाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से 'बधिया स्त्री' की छवि को तोड़ते हैं। कृष्णा

सोबती मित्रो और महकबानो के माध्यम से ऐसी स्त्रियों का चित्रण करती हैं जो अपनी दैहिक इच्छाओं को अपने भीतर ही नहीं रखना चाहती इंदिरा गोस्वामी के यहाँ सौदामिनी, गिरिबाला इत्यादि प्रतिष्ठित परिवारों की महिलाएं हैं जो यौनिक अभिव्यक्ति की संकुचित सीमाओं का अतिक्रमण करती हैं|

निवेदिता मेनन अपनी पुस्तक 'नारीवादी निगाह से' में लिखती हैं कि पितृसत्ता की दृष्टि में बलात्कार मृत्यु से भी भयावह है तथा पीड़ित महिला बलात्कार के बाद सामान्य जीवन नहीं जी सकती।[v] जबकि नारीवादी विचारक बलात्कार को एक जघन्य अपराध मानते हैं पर यह नहीं मानते कि बलात्कार के बाद पीड़ित महिला का जीवन मृत्यु से भी बदतर हो जाता है। इस संदर्भ में 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रतिका तथा 'अहिरण' की निर्मला द्वारा बलात्कार से जुड़े पूर्वाग्रह का खंडन किया गया है कि बलात्कार की शिकार महिलाओं को जीवन पर्यंत अवसाद और अपराधबोध ग्रस्त रहना चाहिए|

कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि में उत्तरोत्तर विकास के तीन सोपान दिखाई पड़ते जिनसे स्त्री सशक्तिकरण का पथ क्रमशः विस्तृत होता प्रतीत होता है। कृष्णा सोबती के स्त्री पात्र संघर्षों में लगातार आगे बढ़ते रहते हैं। मित्रो, रतिका, छुन्ना बीबी, महकबानो ऐसे ही स्त्री पात्र हैं परंतु इंदिरा गोस्वामी के संघर्षशील पात्र अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद बदलाव नहीं ला पाते। सौदामिनी की आत्महत्या, गिरिबाला का आत्मदाह, डोरोथी की हत्या तथा निर्मला द्वारा गर्भपात कराना इसी का द्योतक है। दोनों ही साहित्यकारों की कालांतर की रचनाओं में अरण्या, अम्मू की बेटी, सोबती बाई, दिल्ली विश्वविद्यालय की अध्यापिका तथा थेंगफाखरी ऐसे स्त्रीपात्र हैं जो इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था में अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाने में सफल हुए हैं और यह संदेश देते हैं कि स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन अकेले रहते हुए भी अच्छा और सम्मानजनक जीवन जी सकती हैं|

प्रीतिनिचा बर्मन और द्विजेन शर्मा अपने लेख 'Alternative Masculinities in Indira Goswamis's Fiction' में लिखते हैं कि 'स्त्रीत्व' और 'पुरुषत्व' एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि एक गोलाप्रकार के दो सिरों की तरह हैं। इस संदर्भ में 'डार से बिछुड़ी' में मलिक सरदार, 'सूरजमुखी

अँधेरे के' में असद और दिवाकर, 'समय सरगम' में ईशान, 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में इंद्रनाथ तथा 'अहिरण' में मैनेजर हर्सुल जैसे संवेदनशील पुरुषपात्रों की रचना करना कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की विशेषता है। इस अर्थ में दोनों ही रचनाकार स्त्रीवादी होने के साथ ही मानवतावादी भी हैं।

भारत में स्वाधीनता के लिए शुरू हुए आंदोलनों से ही नारीवादी आंदोलनों की शुरुआत होती है| स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात दहेज विरोधी आंदोलन, बलात्कार के विरुद्ध संघर्ष, सती प्रथा के विरोध में आंदोलन तथा सुरक्षित पर्यावरण के लिए संघर्ष इत्यादि नारीवादी आंदोलनों के मुख्य मुद्दे रहे हैं| भारत के नारीवादी आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में दोनों साहित्यकारों के उपन्यासों का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने बलात्कार तथा विधवाओं के संताप से जुड़े मुद्दों को तो उठाया है परंतु दहेज प्रथा का विरोध तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संघर्ष इत्यादि के विषय में उनके उपन्यासों में विशेष प्रकाश नहीं डाला गया है|

कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी व्यक्ति चेतना की पक्षधर रचनाकार हैं परंतु इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों की तुलना में कृष्णा सोबती के स्त्री पात्रों में व्यक्ति चेतना का स्वर अपेक्षाकृत अधिक मुखर है| उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में डोरोथी तथा विधिबाला द्वारा बलिप्रथा का विरोध करने के माध्यम से इंदिरा गोस्वामी ने सामाजिक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है| कृष्णा सोबती के उपन्यास मुख्यतः घटना प्रधान हैं तथा इंदिरा गोस्वामी के प्रायः सभी उपन्यास तथ्य प्रधान हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श का जो स्वरूप दिखता है वह 'इन्टरसेक्शनल फेमेनिज़्म' का है। 'इन्टरसेक्शनल फेमेनिज़्म' के अंतर्गत व्यक्ति की सामाजिक पहचान तथा उससे जुड़ी संरचनाओं के आधार पर होने वाले भेदभाव और शोषण का अध्ययन किया जाता है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में शोषण के मूल को समझने

का प्रयास किया गया है। दोनों ही साहित्यकार इस तथ्य के प्रति सजग हैं कि समाज तथा परिवार की जटिल संरचना में स्त्री और पुरुष को शोषित और शोषक की तरह विभाजित नहीं किया जा सकता। शोषण के मूल को समझने के लिए जाति, वर्ग तथा लिंग आधारित शोषण को समझने की आवश्यकता है। दोनों साहित्यकारों के उपन्यासों में चित्रित स्त्री जीवन के आधार पर भारत के दो भिन्न भू-भागों पंजाब तथा असम में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक आधार पर स्त्री के संघर्ष को समझा जा सकता है।

कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी का लेखन अपने मूलपाठ और संभावित सभी उपपाठों के साथ उनकी मृत्यु के बाद भी प्रासंगिक बना हुआ है। इंदिरा गोस्वामी अपनी कविता ‘Ode to Whore’ में लिखती हैं-

“People say that

I excel in making wine.

I can turn that wine

Which is brewed today

A hundred years old.

It can make people frenzied and wild

Wine that is brewed, drinking

I too am constantly intoxicated…

The wine I brew

Knows how to make

Songs from stone, songs from ashes…”[vi]

कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी का लेखन कविता में उद्धृत मदिरा (वाइन) की तरह तात्कालिक निर्मित होते हुए भी सौ साल पुरानी मदिरा (वाइन) जैसा दुर्लभ तथा अमूल्य है। कृष्णा सोबती और

इंदिरा गोस्वामी का इतिहास के तथ्यों पर आधारित लेखन, हमें उसी समय में वापस ले जा सकता है और दोनों साहित्यकारों की प्रतिभा से सिंचित यह लेखन राख और पत्थर से भी गीत सृजित कर सकता है।

संदर्भ सूची-

[i] गिल्बर्ट, सांद्रा एम, गुबार सुज़ेन (2007), द मैड वुमन इन द ऐटिक, वर्ल्ड व्यू प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-3

[ii] गिल्बर्ट, सांद्रा एम, गुबार सुज़ेन (2007), द मैड वुमन इन द ऐटिक, वर्ल्ड व्यू प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ- 45

[iii] सुजाता (2021), आलोचना का स्त्री पक्ष, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- 149

[iv] ग्रीयर, जर्मेन (2005), बधिया स्त्री, हिंदी अनुवाद: मधु बी. जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, भूमिका

[v] मेनन, निवेदिता (2021), नारीवादी निगाह से, अनुवाद: नरेश गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-110

[vi] गोस्वामी, इंदिरा (2007), पेन एण्ड फ्लेश, बी. आर. पब्लिशिंग, नई दिल्ली, पृष्ठ-23